अध्याय सोलह

डॉ. शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

[डॉ. शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव के जन्म भोजपुर जिला में 20 मार्च 1936 में भइल रहे । उहाँ का पटना विश्वविद्यालय में आचार्य रहीं । साहित्य सेवा खातिर उहाँ के पद्मश्री के सम्मान मिलल । उहाँ के भोजपुरी-हिंदी में लेखन कइलीं । उहाँ के प्रकाशित किताबन के नाँव हवे- लिफाफा देखकर, निराला जीवन आ साहित्य, अद्भुत रस आ भारतीय काव्यशास्त्र, बहुत दिन के बाद, शब्द पके मन आँच में, जयप्रकाश नारायण । शैलेन्द्र जी सांसद भी चुनल गइल रहीं । उहाँ के प्रस्तुत कहानी में भूमंडलीकरण के प्रभाव से दरकत पारंपरिक मूल्यन के चित्रण भइल बा ।]

केकरा खातिर छठ ?

प्रबोधजी आठ साल से बाहरे बाड़न । छपरा से बी.एस.सी. पास करके दिल्ली गइलन, उहँई से एम.एस-सी. कइलन, एम.बी.ए. कइलन आ उहँई एगो बड़का कंपनी में नौकरी हो गइल । उहँई बिआहो हो गइल, बिहारे के एगो कलक्टर साहब के पी.ए. के बेटी से । शानदार बिआह भइल, खूब ताम-झाम से । लइकी जस नाम तस गुन-निर्मला । गोर, लमछर, एम.ए. पास, गावे में एक नंबर आ घर के कामकाज में एकदम फिट । नोकरी मिलत रहे, बाकी साफ इंकार कर दिहलस । ओकर कहनाम रहे कि जवन मेहरारू दिन भर नोकरी करेली, ओकर बाल-बच्चा बरबाद हो जाला, घर, घर ना रह जाय । घर में रहेवाला दाई-नोकर त अब मिले ना, बड़-बुजुर्ग केहू साथे रहे ना, त के देखी लइकन के ? पहिले वाला जमाना त बा ना कि आठगो-दसगो

बाल-बच्चा में एकाध गो बिगड़ियो जाव, त कवनो खास फरक ना पड़त रहे । अब त एक, ना त हद् से हद दू, बस ! कवनो बिगड़ गइल, त घर-खानदान सब सोगहग साफ ।

सखी-सहेली, अड़ोसिन-पड़ोसिन बहुत समझवली कि दिल्ली में एक बेकत के कमाई से घर ना चली, आज ना बिहान, नोकरी खोजहीं के पड़ी, बाकी निर्मला ना मनली, त ना मनली । अब तक बिआह के सात बरिस हो गइल । लइका एक्के गो भइल-एक बरिस के भीतरे । पाँच साल इंतजार करके ऑपरेशन करा लेली । उनका जिनगी के अकाश में सूरज जस चमके, उनकर अकेला दुलरूआ । नामो रखली -'रवि प्रकाश ।'

प्रबोधजी त आठे बजे घरे से निकल जालन, लौटत-लौटत रात में कहियो साढ़े आठ, कहियो नौ । एतवारो के दिन चार-पाँच घंटा जाहीं पड़ेला । ई मल्टीनेशनल कंपनियन के त इहे हाल बा । पइसा त देवेलीसन् हुमच के, बाकी काम में बखलोइया छोड़ा देवेलीसन् । ना टिफिन, ना लंच, उहेंई आफिसे में टेबुले पर पैकेट पहुँचा दी, एक बजे के बाद । खाए के अलगा से कौनो टाइम नइखे । खातो रहीं, आ कामो करत रहीं । मुँह में कौर बा त का फोन आ जाई, त बतियावहीं के पड़ी, कबही फैक्स आ जाई, कबही ई-मेल आ जाई, कबही देश से, कभी विदेस से । खाए

के बेरा अरबस के कुछ ना कुछ अइबे करी । भोजन के ना कवनो टाइम बा, ना कवनो महत्त्व बा । कइसहूँ मुँह में कुछ ठूँस लेवे के बा । एक्के डिब्बा में दही, चटनी, सब्जी सब घोर-मट्ठा । कुछ देर के बाद भुला जाला कि का खइलीं, का पिअनीं । रात में भी अगर नौ बजे के बाद अफसर रोक लिहलस, त फेर ओइसहीं डब्बा आ जाई । दिनभर जे बाहर पेराई, ऊ लड़िका के कब पढ़ाई, का लिखाई । ऑफिस से चूर होके लौटला के बाद होश रहेला ? केन्ने मेहरारू, केन्ने बेटा ?

रवि के बस त छौ बजे भोरहीं आ जाला, आ डेढ़ बजे दिन में पहुँचा देवेला । रात में त शायदे कभी ऊ प्रबोधजी के आवे तक जागल रहेला । बाप-बेटा के खेलत-बतियावत शायदे केहू देखले होई । ओकर पढ़ाई-लिखाई, खेलकूद, बर-बेमारी, सब जिम्मेवारी बस मतारी पर ।

धन्न बाड़ी निर्मला । एहघ ड़ी अइसन मेहरारू खोजला-ढुँढ़ला से ना मिली, जे बेटा खातिर आपन सौक-सिंगार, सैर-सपाटा, क्लब-सिनेमा, पार्टी-सार्टी छोड़-छाड़ के ओकरे नींने जागे, ओकरे नींने सूते । जगलो में बेटा, सपनो में बेटा । जइसे कवनो मूर्तिकार छेनी-हथौड़ी-नहरनी से एगो पत्थर के कई-कई बरस ले पीट-पाट के, छेद-छाद के, सहेज-सँवार के, एगो देवमूर्ति तराशेला, ओइसहीं

ऊ रोज बेटा के तराशेली ।

भोरहरी उठला से लेके रात के ग्यारह बजे ले, बस रवि, रवि, रवि । रवि के टिफिन, रवि के जूता पालिस, रवि के टाई, रवि के बैग, लौटला पर रवि के खाना, सूतना, खेल, जलपान, खाना, अलमारी, एक-एक चीज के चिंता । आपन सब अरमान ऊ एगो बेटा से पूरा कर लेवे के चाहत रही । एक दिन स्कूल में नागा ना होखे के चाहीं, एक दिन होमवर्क ना गड़बड़ाए के चाहीं । हर समय इम्तहान के बात, नंबर के बात, फस्ट आवे के बात ।

निर्मला ई सब एह से करत रही, काहे कि उनकर हार्दिक इच्छा रहे कि बेटा आई.ए.एस. अफसर हो जाय, कलक्टर हो जाय । उनकर बाबूजी कलक्टर के पी.ए. होके रिटायर कइले रहन । उनका से ऊ रोज साहेब के, मेमसाहेब के किस्सा-कहानी सुनले रही । तबे से उनका दिमाग में घुस गइल कि कलक्टरी कवनो नोकरी ना ह, बादशाहत ह । पूरा जिला में ओकरा मर्जी के बिना पतई ना हिले । करोड़न के मिल्कियत । जेकरा जे कह दी, ओकरा ऊ करहीं पड़ी । गाड़ी-सवारी, चर-चपरासी अफरात । रोज फूल-माला, मिठाई, डिनर । कवनो विभाग के कोई अफसर होखे कलक्टर के सामने सभे छोट हो जाला । जहाँ चाही सड़क

बनवा दी, जहाँ चाही स्कूल खोलवा दी, जे मन में आई, से करी। बड़का बंगला, बगान, खानसामा। एकरा से जादे सुख कहाँ होई, कवना नोकरी में होई ? तीन साल जे कलक्टर रह जाई, ओकर तीन पुश्त तर जाई। बाबूजी त कलक्टर के पी.ए. होके एतना शान से रहनीं, सब बेटियन के बढ़िया शादी कइनी, कवनो बिआह में नौ लाख से कम ना खर्चा भइल। एगो बेटी के बिआह करे में आउर लोग के कचूमर निकल जाला, उहाँ के पाँच-पाँच बेटी के शान से विदा कइनीं। नाता-रिश्ता में कोई उनकर मुकाबला करेवाला ना भइल। बाबूजी मरे के बेरा इहे आशीर्वाद दे गइनीं –'नीरू, बेटा के कलक्टर जरूर बनइह। हम परलोक से सब सुख देख के प्रसन्न होखब। आत्मा जुरा जाई। हमार नाती जरूर कलक्टर बनी।'

बाबूजी के आशीर्वाद आ आपन हुलास, दूनों के सहारे ऊ बेटा के गढ़े में रात-दिन लागल बाड़ी। भगवान जरूर उनकर सुनिहन। अबले त लच्छन अच्छे बा। मतारी के मन लायक बन रहल बा बेटा। ''हैपी स्कूल'' में नाम लिखाइल मामूली बात बा ? टेस्ट भइल, माई-बाप के इंटरव्यू भइल, शुरू में सत्तर हजार रुपया जमा करे के पड़ल आ महीना में सब मिला के बतीस सौ रुपया लाग जाला। ऊपर से ट्यूशन, कपड़ा-लत्ता, जूता-मोजा,

आइसक्रीम, बगैरह । धरलीं पचास हजार रुपया साल ।

स्कूल बा कि देखनिहार के धरनिहार लागी । एयर कंडीशन बिल्डिंग, एकदम झकाझक । टीचरन के देख के लागेला कि आजे लंदन से आइल बाड़ी सन । एक्को शब्द कवनो दोसर बोली के केहू ना बोले । बस फाटाफट अंग्रेजी । अइसे त निर्मलो एम.ए. पास बाड़ी, बाकी ओकनी के अंग्रेजी सुन के त लागेला कि ऊ महामूरख बाड़ी । कहाँ मोतिहारी के कन्या विद्यालय के अंग्रेजी, कहाँ कान्वेंट के अंग्रेजी । मोतिहारी वाली टीचर लदर फादर । ना सिस्टर, ना मदर । एकदम से माईजी-मोटकरी । ईहाँ त तरह-तरह के खेल, रंग-बिरंग के खेलौना, कंप्यूटर, इंटरनेट, का नइखे उहाँ । एक-एक लड़िका के रिपोर्ट कार्ड में ओकर पूरा हुलिया लिखल रहेला । ''हैपी स्कूल'' के टीचर, स्मार्ट, चुहचुह, चले में खटाखट, बोले में फटाफट । हँसे, मुस्काय, हल्लो, हाय के तौर-तरीका । एह वातावरण में त लड़िका साहेब बनबे करी । आऊर-चीजन में भले दू पइसा कटौती हो जाव, बाकिर लइकन के जरूर अंग्रेजी स्कूल में, ठाट-बाट के वातावरण में रख के पढ़ावे के चाहीं, ना त माई-बाप के गलती से, कंजूसी से, लड़िका बकलोल निकल जाई, त सब चउपट । खानदान त लड़िके से जानल जाला ।

एह स्कूल में कवनो लड़िका महीना में तीन दिन से जादे अगर गैरहाजिर हो जाई, त ओकरा माई-बाप के बोला के कारण पूछल जाला, बीमारी होखी त डॉक्टरी सर्टिफिकेट देवे के पड़ी । हर महीना में क्लास में इम्तहान होला, कवनो इम्तहान छूट जाई, त गार्जियन के बोला के "धोलइया" होई । हाफ इयरली छूट जाई, त सालाना में बइठहीं ना दी । चारों ओर से चौंक चढ़ा के सोझ कइले रहेली सन । अइसन स्कूल में बड़ा भाग से, चाहे बड़की पैरबिए से कोई के घुसे के मोका मिलेला । प्रबोधजी भी मनेमन खुश रहेलन कि उनकर बेटा आगे बढ़ रहल बा, आ उनका कवनो झंझट-खटखट नइखे । सब निर्मला सँभारेली ।

बाकी एक दिन इहे स्कूल लेके बड़का झंझट हो गइल । घरे से माई के फोन आ गइल कि "अबकी छठ में तू लोग पूरा परिवार आव । अबकी हम छठ बइठा देब । अब पार नइखे लागत । पोता के मनता रहे, सात छठ के । अब पूरा हो गइल । एह छठ में बबुआ के आवल जरूरी बा ।" प्रबोधजी हुँ-हाँ क के सुन लेहलन, आ कहलन कि "ठीक बा, हम काल्ह फोन क के बताइब, कि का कइसे प्रोग्राम बनी ।" सोचे लगलन कि छठ में आवे-जावे के मतलब बा कम-से-कम आठ दिन के छुट्टी आवाजाही, पबनी-परब, भेंट-मुलाकात सब मिला के । आपन

छुट्टी के त जोगाड़ अपनहीं करे के पड़ी, बाकिर रवि के स्कूल के छुट्टी खातिर त निर्मला से कहे पड़ी । स्कूल के काम त ऊहे करेली । जे घरी फोन आइल, निर्मला आपन कवनो सहेली के घरे गइल रही, अब त राते में बात होई ।

ऑफिस से प्रबोधजी ओ दिन साते बजे लौट अइलन । आके, नहा-धोके, खा-पी के, अब बिछौना पर गइलन त तनी-मनी हँसी-मजाक के बाद निर्मला के देह पर हाथ धके खूब पोल्हा के बतवलन "भोरे माई के फोन आइल रहे, छठ में सबके बोलवले बाड़ी, बबुआ के मानता के छठ बा, एह साल बइठावे के बा, एह से ओकरा लेके चले के बा, जइसे तू कहबू ओइसहीं प्रोग्राम बनीं ।" एन्ने बात पूरा भइल, ओन्ने एकदम झनाक से प्रबोधजी के हाथ टेर के निर्मला गरजे लगली "बबुआ कइसे जाई, आठ दिन स्कूल छोड़ के । ओकरो त नामे कट जाई । एतना दिन से हम दिन-रात ओकर जोग-जतन में एही खातिर लागल बानी कि ओकर नामे कट जाय । रउआ जाए के बा, त जाईं, हम त ना बेटा के छोड़ के जाइब, ना बेटा के लेके जाइब । छठ त हर साल आई-जाई, छठ के नाम पर हम बेटा के जिन्दगी खराब कर दीं ?" प्रबोधजी बोरसी पर छींटा मारे के कोशिश कइलन -"ना-ना, हमार ई मतलब ना रहे । होई त ऊहे जे तूँ कहबू,

बाकिर माई, के कइसे समझावल जाय । छठ के नाम पर कुछ उल्टा-सीधा कहे में भी त डर लागेला । तू कवनो बाहर के त बाड़ू ना, तोहरा त ठीक से मालूम बा कि बिहार में छठ के नाम पर.........।''

निर्मला फुफकारे लगली -''हमरा सब मालूम बा । छठी मइया थोड़े कहिहें कि उनका नाम पर कवनो लड़िका के जिन्दगी बरबाद हो जाय । पूजा-पाठ, दान-पुन्न आदमी बाले-बच्चा खातिर नू करेला ? लइका के मुरूख बना के, पूजा कइला से कवनो देवी-देवता प्रसन्न ना होइहें । हम ना माई के पूजा से रोकतानी, ना रउआ के जाए से, बाकिर हम अपना बेटा के भविष्य पानी में डुबावे खातिर तइयार नइखीं । कान खोल के सुन लीं । आठ दिन ऊ कवनो हालत से बाहर ना जा सके, ''हैपी स्कूल' बा, उहाँ कवनो लटर-पटर ना चली ।'' प्रबोधजी -''त एकर मतलब कि कुच्छो हो जाई, त ऊ ना जा सके । मान ल कि माई के मृत्यु हो जाय, त ऊ श्राद्धो में ना जाई, ओमे त तेरह दिन के लफड़ा लागेला ।'' निर्मला -''ठीक कहतानी कि ऊ ना जा सके । अइसे आजकल दिल्ली में त घरे-घरे तीने दिन में श्राद्ध हो जाला । तेरह दिन वाला श्राद्ध खातिर त राउरो कंपनी मुश्किले से छुट्टी दी । देखीं, समय के हिसाब से सब कुछ बदलेला, सबके

बदले पड़ेला । लकीर के फकीर बनला से एह जमाना में काम ना चली । अरे, ई सब रीति-रिवाज तब बनल रहे, जब सभे एक्के जगह, एक्के साथ रहत रहे । अब बाप कहीं, मतारी कहीं, बेटा कहीं, बेटी कहीं, भाई कहीं, भौजाई कहीं । सब के काम-धाम, सबके दूरी, सबके मजबूरी । रउआ खुद समझे के चाहीं, आ माई के समझावे के चाहीं ।''

–''एही से आउर जरूरी बा कि साल में एकाधो बार त परिवार के लोग घरे जुटो, एक दूसरा के चीन्हों, पहचानो । ना त कवनो सम्बन्धे ना रह जाई । छठ में त हमनी....।''

–''सुनीं । दिल्ली में बिहारी लोग के छोड़ के आउर लोग त छठ ना करे । त ओकनी के नाता-रिश्ता, घर-परिवार कइसे चलेला ? केहू छठ ना करी त का होई ? बिदेश के त बाते छोड़ दीं, इहई जे बड़का-बड़का लोग बा, ओमे केतना लोग किहाँ छठ होला ? राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, सोनिया गाँधी, जयललिता, जार्ज फर्नाडीस, कैबिनेट सेक्रेट्री, अंबानी, टाटा, बिड़ला, केकरा इहाँ छठ होला ? ओकनी किहाँ कवन चीज के कमी बा ? ई सब आपन-आपन विश्वास बा, सब मन मनला के बात ह । सँउसे दुनिया आज एतना-तरक्की कर रहल बिआ, बिना छठे कइले । बिहार में एतना छठ होला, आ उहाँ जेतना

गरीबी बा, अशिक्षा बा, बेकारी बा, लुच्चई बा, ओतना त आउर कहीं नइखे ।''

–''देखऽ । जादे फटर-फटर मत करऽ । एम.ए. का पास कर गइलू कि सब ग्यान तोहरे हो गइल । सब देश में, सब जाति में आपन-आपन धर्म-संस्कृति, रीति-रिवाज बा, कोई कुछ छोड़े के तइयार नइखे । बड़का वकील बनल बाड़ी अंग्रेजी स्कूल के, तनी कह के देख त कि क्रिसमस के छुट्टी ना होखे के चाहीं, स्कूल खोल के पढ़ाव । ओकनी के तोहार बात मान लिहेसन ? उनकर 'गुड फ्राइडे' होखे के चाहीं, 'न्यू ईयर' होखे के चाहीं । ओमें हिंदू, मुसलमान सबके छुट्टी चाहीं, उत्सव मनावे के चाहीं, बाकिर हमन के आपन परब-त्योहार छोड़ देवे के चाहीं, आपन परिवार, आपन रीति-रिवाज, आपन संस्कृति सब छोड़ देवे के चाहीं । जब तोहरे दिमाग के ई हाल बा, त लड़िका के हम का समझाई ? हम जनतीं कि एह स्कूल में नाम लिखवला से ई दिन आई, कि हमरा अपना माई के बात काटे के पड़ी, अपना पत्नी से बेटा खातिर बकझक करे के पड़ी, आ हमार बेटा हमरा से, आ अपना परिवार से टूट के अलग हो जाई, त हम ओकर नामे ना लिखवतीं ।''

–''राउर बेटा रउआ से के छीनता ? पढ़-लिख के बड़का

आदमी बनी, त बाप के नाम दोसर बताई ? रउआ कलक्टर-कमिश्नर के बाप बन के गर्व के अनुभव ना करब ? मतारी के नाम केतना आदमी पूछेला, केतना आदमी जानेला । हम जे कुछ कर रहल बानी, कह रहल बानी, रउरे नाम-जस खातिर, रउअे खानदान के नाम ऊजागिर करे खातिर । एक दिन माई के जरूर बुरा लागी, बाकिर ऊहो ठंढा के सोचिहें, त समझिहें कि दुल्हिन ठीके कइलीं ।''

-''वाह रे दुल्हिन । खूब सास के खेयाल कर रहल बाड़ू ? बनाव बेटा के कलक्टर कमिश्नर, दादी बइठल रहिहें देखे के । अरे हमनी के रहब कि ना, एकरे कवनो ठेकान नइखे । बात अबहीं के बा, दस-बीस साल आगे का होई, के जानता ?''

-''रउआ लेखा सोचे, तब त आदमी बाल-बच्चा खातिर कुछ करबे ना करे ।''

-''अरे तोहरे बाल-बच्चा बा ? हमहूँ त केहू के बच्चा बानी ? हमार माई कभी सोचले होई कि हमार बेटा, आ ओकर बेटा उनका से एतना दूर हो जाई, कि बोलवलो पर झाँकी ना पाड़ी ? धन्न बाड़ू तू, आ धन्न बा 'हैपी स्कूल ।' एतना अनहैपी त हम कभी ना भइल रहीं ।''

-''बड़बड़ाई जन । एकसुरा लेखा सोचला से काम ना

चले । रउआ माई खातिर एतना सोचतानी, त जेकरा पैदा कइनी, ओकरो खातिर त सोचीं । माई के एतना चिंता, आ बेटा के भविष्य के कवनो चिंते ना । मतारी-बाप बेटा-बेटी के चिंता ना करी, त दोसर के करी ? आजकल के जमाना में दोसरा के ना कवनो रूचि बा, ना टाइम बा । आपन परिवार के ख्याल अपने करे पड़ेला ।''

–''परिवार । परिवार परिवार का होला ? खाली मेहरारू आ बाल-बच्चा, बस । एतने ? अरे माई-बाप भी परिवारे होला । बिना माई-बाप के परिवार ? बिना जड़ के पेड़, पत्ती, छाया ? फूल-पत्ती के चिन्ता आ जड़ के कवनो फिकरे ना । गजब सोंच बा ।''

–''देखीं, शान्त होखीं । बहस करब, त राउर ब्लड-प्रेशर बढ़ जाई । दोसर तमाशा लाग जाई । हम चाय बनावतानी ।'' कहके निर्मला चल गइली चाय बनावे, आ प्रबोधजी आँख बन्द क के सोफा पर लेट गइले । अब उनका मुँह से कवनो आवाजे ना निकले । दस मिनट के बाद निर्मला चाय ले के अइली ।

–''उठीं चाय !''

प्रबोधजी चुप्प ।

–''अरे ठंढा नू हो जाई, सुन तानी ?''

प्रबोधजी चुप्प । आँख बंद ।

निर्मला देह धर के हिलवली । देह पसीना से तर-ब-तर । ऊ घबड़ा गइली । मातृत्व भाव दब गइल, पत्नी भाव जाग गइल । अब का करीं ? दिल्ली में त घरे बोलवला पर कवनो डॉक्टर अइबे ना करसन् । अब त अस्पताले ले जायके होई । केकरा बोलाई । के मदद करी ? दिल्ली में कोई के फुर्सत बा ? के साथ जाई ?

कुछ ना सूझल, त निर्मला फोन से एगो टैक्सी बोलइली । कइसहूँ लाद-लूद के एमर्जेन्सी में ले गइली । उहाँ डॉक्टर देख-उख के कहलक कि ''माइल्ड हार्ट-अटैक है । इन्टेन्सिव केयर में रखना होगा ।'' प्रबोधजी भर्ती हो गइलन । चौबीस घंटा के बाद डॉक्टर कहलस कि ''चिन्ता मत कीजिए । ठीक हो जायेंगे ।'' दू दिन में निर्मला के तीनों लोक लउके लागल । बेटा भी स्कूल ना गइल । के तैयार करीत, के पहुँचाइत ? इंटेसिव केयर में त कोई के रहे ना देवे, बाहरे बइठ के रोवस ।

प्रबोधजी जब बाहर अइलन, त निर्मला के इशारा से बोला के कहलन ''रवि'' । ऊ रवि के बोला के उनका लगे खड़ा करा देली । बेटा के माथा पर हाथ रख के रोए लगलन । कोई कुछ ना बोलल ।

घरे लौट के निर्मला से एतने कहलन कि "माई के फोन कर द कि हमार तबियत ठीक नइखे, हम छठ में ना आ सकेब ।" निर्मला कुछ ना बोलली । आज्ञाकारिणी पत्नी लेखा घरे फोन कर देहली । माई पूछत रह गइली कि "का भइल बा ? कइसे एतना तबियत खराब हो गइल ?" निर्मला कुछ ना बतवली, खाली एतने कहली -"सब ठीक बा ।"

माई दोसरे दिन श्रमजीवी से चल दिहली । एकरा पहिले कबहिओं अकेले दिल्ली ना गइल रही । ओ दिन पता ना कहाँ से उनका में एतना हिम्मत आ गइल, एतना फुर्ती आ गइल । दू दिन बाद खरना रहे । अपने टिकट कटवली, अपने स्टेशन से तिपहिया पकड़के प्रबोधजी के घरे पहुँच गइली । माई के देख के प्रबोधजी बिछौना पर से उठ गइलन, आ गोर पकड़ के रोवे लगलन । कोई कुछ ना बोलल । सब कुछ बोलिए के समझावल जाय, ई कवनो जरूरी थोड़े होला । बूढ़-पुरनिया लोग के भले बहुत किताब पढ़े ना आवे, कंप्यूटर चलावे ना आवे, बाकी आदमी के पढ़े आवेला असली बात ताड़ जाय के गजब बुद्धि होला । बेटा के आँसू, बहू के चुप्पी आ रवि के सकपकाहट देख के, उनका बेटा के बीमारी के पूरा अंदाज लाग गइल ।

अगिला दिन प्रबोध जी माई से खाली एतने पूछलन

''आज त खरना बा नू, का-का इंतजाम करे के बा- निर्मला के बता दीह, हम त अभी बाहर जाय लायक नइखीं।''

माई कहली -''कुछ नइखे करे के। अब छठ ना होई। हम सुरूज भगवान से माफी मांग लेनीं। छठ बइठा देलीं। छट्ठी मइया से प्रार्थना कइलीं कि हमरा से, चाहे हमरा परिवार से कवनो गलती भइल होखे त छमा करीह। तू ठीक हो जा, बहू के सोहाग बनल रहो, रवि सूरज लेखा चमकत रहस, बस! अब काहे खातिर छठ, केकरा खातिर छठ? भगवान सजाय दीहें त हमरे नू दीहें, तू लोग खुश रह, जीअ, बाल-बच्चा के उन्नति होत रहो। हमरा अब केतना दिन रहे के बा?''

माई बोलत रही, त सभे चुप रहे। बोलल खतम भइल त रोअे लगली। बस, बिना कोई के कुछ कहले, रवि आके दादी के गोदी में बइठ गइल आ लागल उनकर लोर पोंछे। एक्को मिनट ना भइल होई कि दादी ओकरा अँकवारि में भर के हँसे लगली।

ऊपर सूरज भगवान भी हँसे लगलन।

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रबोधजी कहवाँ नौकरी करस ?

   (क) सचिवालय में (ख) एगो मल्टीनेशनल कंपनी में

   (ग) एगो निजी स्कूल में (घ) कतहीं ना ।

2. प्रबोध के माई केकरा खातिर छठ करे के मनता मनले रहलीं ?

   (क) बेटा खातिर (ख) पोता खातिर

   (ग) बहू खातिर (घ) अपना खातिर ।

3. बूढ़-पुरनिया लोग का का करे आवेला ?

   (क) किताब पढ़े (ख) कम्प्यूटर चलावे

   (ग) आदमी के पढ़े (घ) कुछ ना आवे ।

4. 'केकरा खातिर छठ' कवना विधा के रचना ह ?

5. 'केकरा खातिर छठ' के कहानीकार के नाँव बताईं ?

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. मोतीहारी के कन्या विद्यालय आ दिल्ली के हैपी स्कूल में निर्मला का कवन अंतर बुझात रहे ?

2. पति-पत्नी में बहस काहे हो गइल ?

3. आजकल परिवार के धारणा का हो गइल बा ?

4. आपुस में बहस का बाद प्रबोध का का हो गइल ?
5. निर्मला का फोन कइला का बाद उनकर सास का कइली ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'बूढ़-पुरनिया लोग का आदमी के पढ़े आवेला ।' एह कथन के मतलब समझा के लिखीं ।
2. एह कहानी के कथानक संक्षेप में लिखीं ।
3. एह कहानी में आज के कवना जटिल सामाजिक-पारिवारिक स्थितियन के चित्रण बा ? अपना शब्दन में लिखीं ।

भाषा

1. नीचे दिहल शब्द कवना तरह के हउवन स ?
   गोर, लमछर, सोगहग, दुलरूआ, बखलोइया, कचूमर ।
2. एह पाठ में आइल दस गो युग्म शब्द चुन के लिखीं । (जइसे-नाता-रिश्ता, खेल-कूद, बर-बेमारी ।)
3. नीचे दिहल मुहावरन के अर्थ बतलाईं-
   बखलोइया छोड़ावल, देखनिहार का धरनिहार लागल, धोलइया भइल, उल्टा-सीधा कहल, कान खोल के सुनल, बात काटल ।

परियोजना कार्य

1. बिहार के सबसे लोकप्रिय पर्व छठ मानल जाला । एह में नहा-खा से लेके अरघ देवे तक कवन-कवन विध होला, पता करके लिखीं ।

2. 'छठी मइया' के अनेक लोकगीत गावल जाला, जइसे-

(क) केरवा जे फरेला घवद से, ओपर सुग्गा मेड़राय,

सुगवा के मरबो बनूक से, सुग्गा गिरे मुरूछाय,

सुगनी जे रोवेली वियोग से, सुगना गइले मुरूछाय ।

एही तरे के कम-से-कम पाँच गो गीत गाँव-घर के केहू परखइतिन से पूछि के लिखीं ।